असली धन

इस चित्र को देखो। यह चित्र हमारे राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी का है। इन्हें हम प्यार से 'बापू' भी कहते हैं। वे एक महान् पुरुष थे। उनके परिश्रम और बलिदान से आज हमारा देश स्वतंत्र है।

यह घटना उन्हीं के जीवन से सम्बन्धित है।

गुजरात प्रदेश के सेवाग्राम नामक स्थान पर बापूजी ने अपना आश्रम बनाया था। यह घटना उसी आश्रम की है।

एक दिन गाँधीजी सवेरे घूमने निकले। और भी कुछ लोग उनके साथ थे। अचानक गाँधी जी की दृष्टि मार्ग में पड़े पूनी के एक छोटे से टुकड़े पर पड़ी। उन्होंने साथ में चल रही एक बहन को उसे उठा लेने का संकेत किया। उस बहन ने उसे उठा लिया।

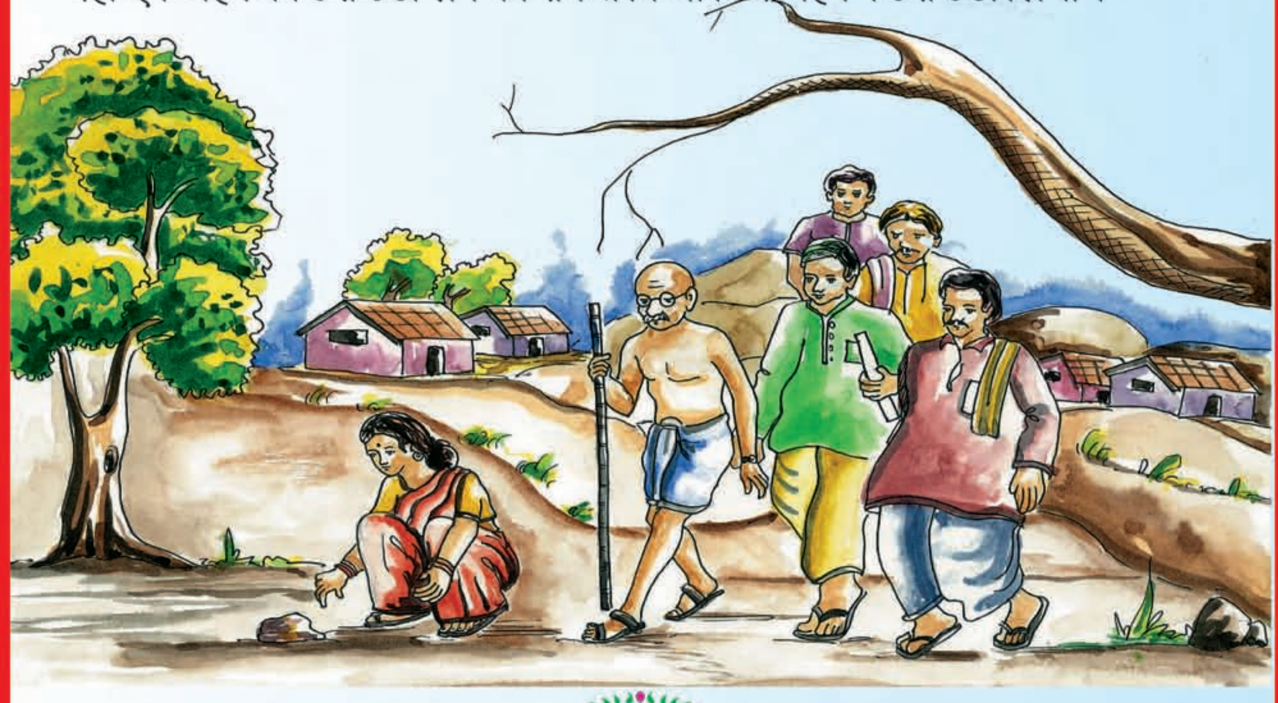

टहलने के वाद गाँधी जी जब आश्रम में लौटे तो उन्हें सहसा पूनी के उस टुकड़े की याद हो आई । जिस बहन ने उसे उठाया था, उसे बुलाया गया। गाँधी जी ने कहा, ''पूनी के जिस टुकड़े को तुमने उठाया था, उसे ले आओ। ''

वह बहन यह सुनकर हैरान हो गई । बोली, ''बापू! मैंने तो यह सोचकर कि मार्ग में कचरा पड़ा है, उसे उठाकर कूड़ेदान में डाल दिया।''

गाँधी जी की त्यौरियाँ चढ़ गई, उन्होंने पूछा,''यदि वहाँ पैसा पड़ा होता, तो क्या तुम उसे उठाकर कचरे में डाल आती ?

उसने उत्तर दिया, ''नहीं।''

''तब'', गाँधी जी ने कहा, ''वह भी पैसा ही था। असली धन क्या है ? यह तुम्हें आश्रम में रहकर पहचानना चाहिए । जिसने उस पूनी को बिना पूरा काते छोड़ा, उसने तो धन फेंका ही; परन्तु मैंने तुमसे उठाने को कहा, तब भी तुम उस धन को नहीं पहचान सकी। जाओ, उसे ले आओ। स्मरण रखो, परिश्रम से धन बनता है और धन बनने पर उसका उचित उपयोग करना हमारा कर्तव्य है।''

एक अन्य अवसर पर गाँधी जी ने कहा था कि यदि हम एक छोटी-सी चीज़ को संभाल नहीं सकते, तो स्वराज्य को संभालना भी हमारे लिए कठिन होगा ।

शब्द-अर्थ :

महान् - बहुत ऊँचे विचार वाले

परिश्रम - मेहनत

बलिदान - त्याग

स्वतंत्र - आजाद

दृष्टि - निगाह, नजर

मार्ग - रास्ता

आश्रम - वह स्थान जहाँ महान व्यक्ति अपने शिष्यों के साथ रहते हैं।

पूनी - धुनी हुई   की बाती, जो सूत कातने के लिए   जाती है।

संकेत - इशारा

याद - स्मरण

सहसा - अचानक

हैरान होना - आश्चर्य में पड़ जाना

कचरा - कूड़ा - करकट

कूड़ेदान - कूड़ा रखने का पात्र

त्यौरियाँ चढ़ गईं - गुस्सा आ गया

स्मरण रखो - याद रखो

उचित - ठीक-ठीक

उपयोग - प्रयोग, काम में लाना

अवसर - मौका

कर्तव्य - जिम्मेदारी

स्वराज्य - अपना राज्य

कठिन - मुश्किल

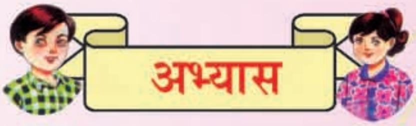

सोचो और बताओ :

१. हमारे राष्ट्रपिता कौन हैं ?

२. हम महात्मा गाँधी को प्यार से क्या कहकर पुकारते हैं ?

३. किसके कारण हमें स्वतंत्रता मिली है ?

४. मार्ग में गाँधी जी की दृष्टि किस पर पड़ी ?

५. उन्होंने साथ में चल रही एक बहन को क्या संकेत किया ?

६. आश्रम में पहुँचकर गाँधीजी ने उस बहन से क्या कहा ?

७. उस बहन ने पूनी के बारे में क्या उत्तर दिया ?

८. गाँधी जी ने गुस्से में उस बहन से क्या पूछा ?

९. गाँधी जी के अनुसार असली धन क्या है ?

१०. गाँधी जी ने हमारा कर्त्तव्य क्या बताया ?

११. निम्नलिखित वाक्यों के खाली स्थान भरो :

क) गुजरात प्रदेश के ____ नामक स्थान पर बापूजी ने अपना आश्रम बनाया था ।

ख) अचानक गाँधी जी की _____ मार्ग में पड़े पूनी के एक छोटे से टुकड़े पर पड़ी ।

ग) ______ से धन बनता है ।

घ) मैंने तो यह सोचकर कि मार्ग में _____ पड़ा है, उसे उठाकर कूड़ेदान में डाल दिया ।

ङ) धन बनने पर उसका उचित ______ करना हमारा कर्त्तव्य है।

१२. नीचे 'क' स्तंभ में शब्द और 'ख' स्तंभ में उनके अर्थ दिए गए हैं। उनका मिलान करो :

'क'	'ख'
कर्त्तव्य	मेहनत
संकेत	त्याग
बलिदान	आजाद
स्मरण	जिम्मेदारी
स्वतंत्र	रास्ता
मार्ग	इशारा
परिश्रम	याद
	अकेला

भाषा-कार्य :

क्रिया : निम्नलिखित वाक्यों को पढ़ो :

१. गाँधी जी घूमने निकले ।

२. बहन ने पूनी का टुकड़ा उठा लिया ।

३. परिश्रम से धन बनता है ।

पहले वाक्य में 'घूमने निकले' में घूमने निकलने का काम गाँधी जी ने किया ।
दूसरे वाक्य में 'उठा लिया' में उठा लेने का काम बहन ने किया ।
तीसरे वाक्य में 'बनता है' में बनने का काम धन का होता है ।

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना जाना जाता है, उसे क्रिया कहते है ।
यहाँ घूमने निकले, उठा लिया, बनता है - क्रियाएँ हैं।

१. निम्नलिखित वाक्यों के क्रियाओं को रेखांकित करो :

  क) गाँधी जी ने कहा ।

  ख) इस चित्र को देखो ।

  ग) उसने धन फेंका ।

  घ) उसे संभालना हमारे लिए कठिन होगा ।

श - ष - स :

निम्नलिखित शब्दों में से 'श', 'ष', और 'स', वर्णों से बने शब्दों को अलग-अलग सूची में रखो :

स्मरण, राष्ट्र, संबंधित, पुरुष, परिश्रम, देश, अवसर, स्वतंत्र, स्थान, आश्रम, इस, साथ, दृष्टि, संकेत, सहता, जिस, सुनकर, सोचकर, पैसा, स्वराज्य, शरण

तुम अपने मन से सोचकर 'श', 'ष', 'स' वाले पाँच-पाँच शब्द लिखो।

तुम्हारी समझ में :

१. इस पाठ में गाँधी जी ने हमें क्या शिक्षा दी है ?

२. क्या होता अगर गाँधी जी रास्ते पर पड़े पूनी के टुकड़े की ओर ध्यान नहीं देते।

तुम्हारे लिए काम :

इस पाठ से संयुक्त वर्ण वाले शब्दों को छाँटो और उन्हीं वर्णों से बने नए शब्द लिखो ।

गाँधी जी के संबंध में अन्य विषय पढो, जिनसे हमें कोई-न-कोई शिक्षा मिलती हो ।

अंत्याक्षरी

तुम एक शब्द लिखो । उसी शब्द के अंतिम वर्ण से फिर एक शब्द उसके सामने लिखो । उसी दूसरे शब्द के अंतिम वर्ण से फिर तीसरा शब्द बनाओ । इस प्रकार बढ़ाते जाओ ।